

B.A.T SEM

Education

Conceptual Framework of Education

Course Code - E010101 T

Unit 1.

Q.1

शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करते हुये शिक्षा की परिभाषा दीजिये।

Ans.

शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में एजुकेशन कहते हैं। एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एजुकेटम शब्द से हुयी है जिसका अर्थ है शिक्षण अथवा प्रशिक्षण कार्य।

एजुकेटम शब्द दो शब्दों के योग से बना है E और Duco.

E का अर्थ है अन्दर और Duco का अर्थ है अग्रसर करना।

अर्थात् अन्दर से बाहर की ओर प्रकाशित करना। यहाँ पर शिक्षा अन्तर्निहित शक्तियों के बाह्य प्रकाशन करने वाली प्रक्रिया के अर्थ में प्रयुक्त होती है। हिन्दी का शिक्षा शब्द भी संस्कृत की शिक्षा शब्द से बना है। इस अर्थ में प्रकाशित करना।

शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये शिक्षाशास्त्रियों ने निम्न-निम्न परिभाषाएँ दी हैं यहाँ हम कुछ परिभाषाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं-

अरस्तु के अनुसार "शिक्षा का अर्थ है स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण करना।"

पेस्टॉलाजी के अनुसार "शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वभाविक, समन्वित तथा प्रगतिशील विकास है।"

लॉक के अनुसार "पौधे कृषि द्वारा विकसित होते हैं और मनुष्य शिक्षा से।"

गाँधी जी के अनुसार "शिक्षा से पेरा औमत्ताप बालक तथा मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्तम गुणों के सर्वांगीण विकास से है।"

स्वामी विवेका नन्द के अनुसार "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि

शिक्षा अन्तर्निहित शक्तियों का बाहर की ओर

प्रकाशन एवं उनका परिमर्जन है।

Q.2

शिक्षा का व्यापक अर्थ बताइए।

Ans.

शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत मानव जीवन का प्रत्येक पहलू आ जाता है। इस अर्थ के अनुसार सम्पूर्ण विश्व शिक्षा का एक विशाल मैदान है। इस विशाल विश्व में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कुछ न कुछ, किसी न किसी रूप में सीखता रहता है। वास्तव में शिक्षा को मानव विकास की प्रक्रिया माना गया है व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ

न कुद सीखता रहता है और अपना विकास करता है। इसी-
विकास-शक्ति के बल पर मनुष्य अनेक विपरीत परिस्थितियों
एवं वातावरण पर विजय प्राप्त करता है।

शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा को जीवन-परिणत चलने वाली
प्रक्रिया कहा है। जे. एस. मैकेजी ने लिखा है कि
"व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवनपरिणत
चलती रहती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके
मण्डार में वृद्धि होती है। शिक्षा को जीवन का प्रमुख
साध्य भी कहा जा सकता है।"

इस प्रकार शिक्षा आजीवन चलने वाली
प्रक्रिया है यह जन्म से मृत्यु तक अनवरत रूप से चलती
रहती है। मनुष्य अपने आस-पास के वातावरण, घर-
परिवार पास पड़ोस संगी साथियों से अपने कार्यक्षेत्र से
कुद न कुद सीखता रहता है और अनुभव प्राप्त करता रहता
है। और इन अनुभवों के आधार पर अपने जीवन में
कुद न कुद परिवर्तन अवश्य लाता है। इन्हीं परिवर्तनों के
फलस्वरूप मनुष्य का विकास होता है। इसी लिये शिक्षा
को विकास की प्रक्रिया भी कहा गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा
जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है।

क. 3 शिक्षा का संकुचित अर्थ बताइए।

Ans. विद्यालय, मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों एवं गुरुद्वारों
में दिये जाये वाले ज्ञान को शिक्षा कहते हैं यह शिक्षा

का संकुचित अर्थ है और संकुचित अर्थ में विद्यालयी शिक्षा ही शिक्षा है। अर्थात् केवल विद्यालयों में चलने वाली प्रक्रिया है। जो शिक्षकों और छात्रों के बीच चलती है। इस दृष्टि से मनुष्य का विद्यालय जीवन ही शिक्षा काल होता है। विद्यालयी शिक्षा एक निश्चित समय तक एक निश्चित योजना के अनुसार चलती है। इसके उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि-सभी निश्चित होते हैं। तथा पाठ्यपुस्तकों के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। इसी लिये विद्यालयी शिक्षा को पुस्तकीय शिक्षा कहा जाता है।

Q.4. शिक्षा की प्रकृति कैसी है ?

Ans.

शिक्षा व्यक्ति को भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के प्रति अनुकूलन के योग्य बनाती है, किन्तु शिक्षा केवल इस सत्य तक सीमित नहीं है वास्तव में शिक्षा के द्वारा व्यक्ति वातावरण का नव-निर्माण करके उसका जनक तथा परिवर्तनकारी बनता है।

शिक्षा की प्रकृति न तो कला है और न ही विज्ञान है। इसकी प्रकृति कला और विज्ञान दोनों ही है। इसके लिये अप्रयुक्त शब्दावली शिक्षा की कला तथा शिक्षा विज्ञान प्रयुक्त कर सकते हैं।

शिक्षा विज्ञान न तो पूर्णतः वैज्ञानिक है और न ही व्यावहारिक। इसमें वैज्ञानिक और व्यावहारिक दोनों पक्ष देखने को मिलते हैं।

वैज्ञानिक प्रवृत्ति ने शिक्षा की प्रकृति में बदलाव प्रस्तुत किया है। इस बदलाव के फलस्वरूप शिक्षा को एक विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा है। परन्तु इस विज्ञान का स्वरूप सामाजिक है। इस कारण शिक्षा को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में देखा जाता है। सामाजिक विज्ञान के रूप में यह नवीन व्याख्या प्रस्तुत करती है और शैक्षिक प्रक्रिया की सम्पूर्ण संरचना में बदलाव ला रही है। इस दृष्टि से शिक्षा गत्यात्मक तथा प्रगतिशील हो रही है। साथ ही शिक्षा विज्ञान निष्पामक तथा प्रमाणिक भी है।

इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप शिक्षा के विषय-क्षेत्र में शैक्षिक मूल्यों, शैक्षिक अनुसंधान, शैक्षिक तकनीकी आदि को स्थान मिला।

शिक्षा विज्ञान में जीवशास्त्र जैसे भौतिक विज्ञानों के साथ-साथ मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों को स्थान प्राप्त है। इसमें शिक्षण प्रक्रिया का अन्वेषण भी शामिल है। अन्वेषण के माध्यम से शिक्षण सभी कौशल को प्राप्त किया जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा विज्ञान और कला दोनों हैं।

Q.5 शिक्षा के क्षेत्र-क्षेत्र से अंग है ?

Ans. शिक्षा के प्रमुख तीन अंग हैं —

शिक्षक

प्राचीन काल से शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शिक्षक के अभाव में शिक्षण की प्रक्रिया अपूर्ण होती है। शिक्षक ही छात्र के ज्ञानार्जन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसके साथ ही छात्र की रुचियों, योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था करता है। इस तरह शिक्षक बालकों में वांछनीय सामाजिक-गुणों को उत्पन्न करता है। चूंकि शिक्षक आदर्शमय होता है। अतः उसके व्यक्तित्व की आदर्श छाप भी बालकों के अपर-प्रत्यक्ष रूप से पड़ती है। यही कारण है कि शिक्षा के सफल निर्वहण का दायित्व योग्य शिक्षकों के कंधों पर है। शिक्षक बालक के विकास में पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है।

शिक्षार्थी — इस अर्थ है सीखने वाला। यह

शिक्षा-प्रक्रिया का मुख्य अंग होता है। शिक्षार्थी की अनुपस्थिति में शिक्षा की प्रक्रिया चलने का कोई प्रश्न ही नहीं। शिक्षार्थी अपनी रुचि, क्षमता

और योग्यता के अनुसार सीखता है। बालक को पूर्ण रूप से समझे बिना शिक्षण कार्य सफलता पूर्वक सम्पादित नहीं किया जा सकता है। अतः स्पष्ट है कि दूसरा महत्वपूर्ण अंग छात्र ही होता है। शिक्षा देने वाले के साथ-साथ ग्रहण करने वाला भी तो होना चाहिए। यदि शिक्षा ग्रहण करने वाला कोई स्तम्भ नहीं है तो शिक्षक का कोई अस्तित्व नहीं होगा। यही कारण है कि शिक्षक और शिक्षार्थी का एक-अनूसर सम्बन्ध है। इसके अभाव में शिक्षा प्रक्रिया शून्य ही होगी।

पाठ्यक्रम — छात्र अथवा बालक समाज की अभिन्न

इकाई होता है। समाज में ही बालक जन्म लेता है और उसका पालन पोषण होता है। उसे समाज के नियमों के अनुसार ही आचरण करना होता है। समाज के अनुरूप आचरण करने की शिक्षा बालक को शिक्षा प्रक्रिया के विविध रूपों द्वारा ही प्राप्त होती है। शिक्षा समाज के अनुरूप अथवा बालक के मावी विकास के लिये एक योजना रखती है जिसे वर्तमान विद्वानों ने पाठ्यक्रम की संज्ञा दी है। छात्र को जो कुछ सिखाया जाता है या उसे सीखना होता है वही पाठ्यक्रम कहा जाता है। अतः पाठ्यक्रम वह माध्यम है जिसके सहारे अध्यापक व छात्र दोनों ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। यह पाठ्यक्रम ही शिक्षा का तीसरा अंग है।

Q.6

औपचारिक शिक्षा का अर्थ लिखिये।

Ans.

औपचारिक शिक्षा को नियमित शिक्षा भी कहा जाता है यह शिक्षा किसी संस्था द्वारा एक विशेष विधि एवं व्यवस्था के अनुसार किसी निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर किसी विशेष समय अथवा अवधि में दी जाती है। अतः विद्यालय ही ऐसे स्थल है जिसे समाज अपनी आवश्यकता अनुसार स्थापित करता है। इस प्रकार की शिक्षा आचरण में परिवर्तन लाने के लिये पूर्व संकल्पित एवं पूर्व संयोजित होती है। इस शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। यह व्यक्ति में ज्ञान और कौशल का विकास करती है और उसे किसी व्यवसाय अथवा उद्योग के लिये योग्य बनाती है।

Q.7

अनौपचारिक शिक्षा का अर्थ लिखिये।

Ans.

यह शिक्षा जिसकी कोई योजना नहीं बनाई जाती है जिसके न उद्देश्य निश्चित होते हैं न पाठ्य-पुस्तकें और न शिक्षण विधियाँ और जो आकस्मिक रूप से सदैव चलती रहती है उसे अनौपचारिक शिक्षा कहते हैं। यह शिक्षा

जीवन परिणत चलती रहती है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। इस प्रकार की शिक्षा बालकों को समाज में रह कर ही प्राप्त होती है। यह शिक्षा समाज में अपने से बड़ों का अनुकरण करके प्राप्त की जाती है। कमी-कमी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन के अनेक आयामों से तथा स्वयं के अनुभवों से यह शिक्षा प्राप्त की जाती है। यह शिक्षा बालक के स्वाभाविक विकास के साथ-साथ चलती है। जन्म के उपरान्त बालक वातावरण से अनुकूलन बनाने के लिये प्रतिक्रियाशील हो उठता है। यही है उसकी अंगोप-चारिक शिक्षा आरम्भ होती है। वास्तव में यह शिक्षा-सम्पूर्ण जीवन के अनुभवों से सम्बंधित होती है। इसमें किसी प्रकार का बन्धन नहीं होता है। यह शिक्षा खेल-कूद उठने-बैठने धूमने अथवा यात्रा करने तथा समाज के लोगों से प्राप्त होती है। इस प्रकार की शिक्षा के साधन हैं—परिवार, धर्म, समाज, राज्य, समाचार पत्र, रेडियो, खेल के मैदान, पुस्तक समूह, दलगत संगठन, टेलीवीज सिनेमा आदि।

कमिनि आगामी कामगारों के लिए आगामी कामगारों के लिए
कमिनि आगामी कामगारों के लिए आगामी कामगारों के लिए
कमिनि आगामी कामगारों के लिए आगामी कामगारों के लिए

Q. 8

निरौपचारिक शिक्षा से आप क्या समझते हैं?

Ans.

वह शिक्षा जो औपचारिक शिक्षा की भाँति विद्यालय, महा विद्यालय और विश्वविद्यालय की सीमा में नहीं बाँधी जाती है। परन्तु औपचारिक शिक्षा की तरह इसके उद्देश्य व पाठ्यक्रम निश्चित होते हैं। लेकिन इसकी योजना में लचीलापन होता है। इसका मुख्य उद्देश्य सामान्य शिक्षा का प्रसार और शिक्षा की व्यवस्था करना होता है। इसकी पाठ्यचर्या सीखने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निश्चित की जाती है। प्रौढ़ शिक्षा, सतृ शिक्षा, खुली शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा ये सभी निरौपचारिक शिक्षा के विभिन्न रूप हैं। इस शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके द्वारा उन व्यक्तियों को शिक्षित किया जाता है जो औपचारिक शिक्षा का लाभ नहीं उठा पाये हैं।

Q. 9

निषेधात्मक शिक्षा से आप क्या समझते हैं?

निषेधात्मक शिक्षा

निषेधात्मक शिक्षा को नकारात्मक शिक्षा भी कहते हैं। यह शिक्षा बालक के स्वभाव के अनुकूल होती है तथा यह किसी पूर्व निर्धारित आदर्श से

प्रेरित नहीं होती है। इस प्रकार की शिक्षा में बालकों को कार्य करने की स्वतंत्रता रहती है तथा बालक अपनी गति, रुचि, क्षमता के अनुसार सीखता है। उस पर ज्ञान थोपा नहीं जाता है। प्रसिद्ध दार्शनिक रूसो इस प्रकार की शिक्षा के पक्षपाती थे। उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखा है कि मैं उसे सच्ची शिक्षा मानता हूँ जो शरीर के उन अंगों को पूर्ण करती है जो ज्ञान के साधन हैं। जो बालक को बालक मात्र कर दी जाती है और मान कर नहीं दी जाती है। रूसो के अनुसार वास्तविक शिक्षा वही है जो बालक का स्वाभाविक विकास करती है। बालक पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालती है। बालक अपनी गति के अनुसार सीखता है।

Q. 10

शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य से आप क्या समझते हैं?

Ans.

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक की व्यक्तिगत शक्तियों का पूर्ण विकास है। प्रत्येक बालक में अपने विशेष गुण और योग्यताएँ होती हैं। बालक के इन जन्म-जात विशेष गुण को विकसित करना और उसको इन गुणों को प्रयोग करने की क्षमता देना शिक्षा का मुख्य एवं सर्वमान्य उद्देश्य है। बालक को अपनी रुचि, प्राकृतिक गुण तथा

आवश्यकताओं के अनुसार विशेष दिशा में विकास करने की पूर्ण स्वतन्त्रता एवं अवसर मिलने चाहिये और बालक की जिस ओर रुचि हो उसी ओर बढ़ने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये। बालक की रुचि के विरुद्ध उसे किसी कार्य को करने के लिये बाध्य नहीं करना चाहिये। बालक को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये जो उसकी रुचि के अनुकूल हो। शिक्षा में व्यक्तित्व के विकास का उद्देश्य तय नहीं है। वर्तमान समय में शिक्षा मनोविज्ञान की प्रगति के कारण बालक के व्यक्तित्व को विशेष महत्व दिया जा रहा है। आज जितनी भी नवीन शिक्षण प्रणालियाँ प्रयोग में लानी जा रही हैं उन सबका लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है।

Q. 11 शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Ans. शिक्षा का उद्देश्य बालक में सामाजिक भावना का विकास करना है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह निरन्तर अकेला नहीं रह सकता। समाज से हृद्यक उसका कोई अस्तित्व नहीं है। रैमण्ट के अनुसार "निःसमाज व्यक्ति कोरी कल्पना

है।" वह समाज में ही उत्पन्न होता है और उसी में रहता है। समाज ही उसका भरण-पोषण करता है। समाज के द्वारा ही उसकी योग्यता में वृद्धि होती है। शिक्षा का उद्देश्य बालक में ऐसी क्षमता का विकास करना है जिससे वह समाज में अनुकूलन स्थापित कर सके और वह दूसरे के साथ सहयोग कर सके और दूसरों से सहयोग प्राप्त कर सके। वह समाज का कल्याण कर सके और समाज के हित के लिये अपने हित का त्याग कर सके। अतः शिक्षा का उद्देश्य बालक को एक उत्तम सामाजिक प्राणी एवं नागरिक बनाना है। शिक्षा का उद्देश्य बालक के अन्दर मानवीय गुणों का विकास करना एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति उसमें आस्था उत्पन्न करना है। समाज में रह कर बालक परस्पर भावों, विचारों, अनुभवों तथा क्रियाओं का आदान-प्रदान करता है जिससे उसका सामाजिक विकास होता है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। इस प्रकार शिक्षा का सामाजिक विकास का उद्देश्य बहुत ही महत्व पूर्ण उद्देश्य है।

Q. 12

शिक्षा के जीविकोपार्जन के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Ans.

जीविकोपार्जन के उद्देश्य का अभिप्राय है कि व्यक्ति को शिक्षा के द्वारा इतना समर्थ बनाया जाये कि वह अपनी मौखिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके तथा अपने जीवन का निर्वाह कर सके। बालक को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो व्यावसायिक शिक्षा बालक को प्रदान की जा रही है, वह बालक की रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुरूप होनी चाहिए। इसके साथ ही किसी भी व्यावसायिक शिक्षा को ग्रहण करने के पश्चात् बालक को आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर अवश्य होना चाहिए। स्पेन्सर महोदय के अनुसार - "किसी भी व्यवसाय के लिये तैयार करना हमारी शिक्षा का प्रमुख अंग है।"

महात्मा गाँधी के अनुसार "सच्ची शिक्षा को बालक के लिये बेरोजगारी के विपरीत एक बीम के रूप में होना चाहिए।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा का व्यावसायिक उद्देश्य सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

Q. 13

शिक्षा के सांस्कृतिक विकास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

Ans.

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बालक का सांस्कृतिक विकास करना है। शिक्षा के द्वारा बालक सुसंस्कृत, सम्यक् और शिष्ट बनता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक अनुभव प्राप्त कर सके। अथवा उच्च विचारों, कला की वस्तुओं एवं मानवीय गुणों और सचिपों को समझ सके। जो व्यक्ति कला, साहित्य तथा संगीत में रुचि रखता है वही सम्यक् और सुसंस्कृत है। ओटावे के अनुसार "समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहारों के प्रतिमानों को अपने सदस्यों को प्रदान करना शिक्षा का कर्प है।"

शिक्षा का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना, उसका उपयोग एवं विकास करना तथा उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना है। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक का सांस्कृतिक विकास कर सके। महात्मा गाँधी ने इस उद्देश्य को महत्वपूर्ण माना है। उनका कथन है कि "संस्कृति ही मानव जीवन की आधारशिला और मुख्य वस्तु है।"

Q. 14

शिक्षा के लोकतान्त्रिक उद्देश्य बताइए।

Ans.

शिक्षा का उद्देश्य बालक में लोकतान्त्रिक मानव का विकास करना है। प्रजातन्त्र में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य उत्तम नागरिक उत्पन्न करना है। शिक्षा के द्वारा बालक में समानता की भावना उत्पन्न होती है। शिक्षा मानव के का सर्वांगीण विकास स्वतंत्र वातावरण में करती है। बालक के अन्दर प्रेम, सहयोग, समानता आदि मानव भाव उत्पन्न करती है। प्रजातन्त्र में नागरिकता एक चुनौती पूर्ण दायित्व है जिसके लिये प्रत्येक नागरिक को प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य बालक में उत्तम आदतों का विकास करना है। उत्तम आदतें नागरिकों को साहसी, उत्साही एवं परिश्रमी बनाती हैं। प्रजातान्त्रिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को लोकतन्त्र समझने एवं जीवन में सामाजिक उत्थान को अपना लक्ष्य बनाते में सहयोग प्रदान करना है। बालकों में आत्मनुराज्य की भावना का विकास करना है। बालकों में मानवीय व्यक्तित्व हेतु सम्मान एवं श्रद्धा के भाव विकसित करना है।

Unit II

Q.15.

शिक्षा के मुख्य कार्यों पर प्रकाश डालिए।

Ans.

शिक्षा के प्रमुख कार्य निम्न लिखित हैं —

1. शिक्षा मावी जीवन की तैयारी में योगदान देती है —

शिक्षा का प्रमुख कार्य बालक को मावी जीवन के लिये तैयार करना है। शिक्षा बालक को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है जिससे वह अपने आने वाले जीवन में समस्याओं का समाधान कर सके। अपने जीवन में अपने अधिकारों और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हो कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके। शिक्षा का कार्य है कि बालक के अन्दर ऐसी क्षमता का विकास करे जिससे बालक में उचित कार्यों को चुनने की निपुणता विकसित हो सके। यह विकास वर्तमान सम्भावनाओं का पूर्ण उपयोग करने से सम्पादित होता है।

2. शिक्षा अनुभवों का पुनर्गठन एवं पुनर्चर्चा का कार्य करती है —

शिक्षा विद्वानों ने शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया कहा है। मनुष्य को अपने वातावरण तथा अन्य

व्यक्तियों के सम्पर्क में आ कर अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं। शिक्षा उन अनुभवों को संगठित करने का कार्य करती है और मनुष्य को मावी उत्थिति के लिये उनका प्रयोग करना सिखाती है। मानव जीवन में अनुभवों की प्राप्ति पुनर्गठन तथा पुनर्रचना की प्रक्रिया से चलती रहती है।

3. व्यावसायिक कुशलता की प्राप्ति

शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाने का कार्य करती है। जब शिक्षा द्वारा मनुष्य ज्ञान और कर्तव्य के बोध से परिपूर्ण हो जाता है, तो वह अपने पैरों पर खड़ा होगा स्वयं सीख जाता है। शिक्षा बालक को व्यावसायिक कुशलता प्रदान करने का कार्य करती है। शिक्षा के द्वारा बालक को विभिन्न व्यवसायों का ज्ञान होता है। बालक अपने अन्दर निहित अन्तः कौशल के अनुसार व्यवसाय का चयन करता है। अन्ततः वह स्वयं अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर जीविकोपार्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होता है। शिक्षा का यह कार्य उसके अन्य कार्यों की तुलना में विशेष महत्वपूर्ण माना गया है।

4. शिक्षा बालक के चरित्र का विकास करती है

शिक्षा का कार्य बालक के उत्तम चरित्र का

निर्माण करना है। शिक्षा द्वारा बालक में दया, करुणा, सत्य, अहिंसा, त्याग, विनम्रता, परोपकार आदि भावनाओं का विकास किया जाता है। एरबर्ट ने लिखा है कि -
 "शिक्षा उत्तम नैतिक चरित्र का विकास है।"

5. मूल प्रवृत्तियों का नियन्त्रण, मार्गान्तीकरण तथा शोधन

शिक्षा का कार्य बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन उन पर नियन्त्रण तथा मार्गान्तीकरण करना है। चार्ल्स में जिन्हे हम अन्तःशक्तियाँ कहते हैं वे ही मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं। शिक्षा के द्वारा बालकों की मूल प्रवृत्तियों का शोधन कर के उनका मार्गान्तीकरण किया जाता है जिससे बालक का समुचित विकास हो सके।

6. सांस्कृतिक विरासत का स्थानान्तरण

शिक्षा का कार्य सांस्कृतिक विरासत का हस्तान्तरण करना है। शिक्षा संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती है। संस्कृति का अर्थ है किसी भी समाज में मानव के रहने का ढंग। प्रायः संस्कृति के अन्तर्गत, उस समाज के जिसमें मानव रहता है, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, उपकरण, यन्त्र, मशीनें, नैतिकता, कला, विज्ञान, धर्म, विश्वास, आस्था, सामाजिक संगठन, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था आदि का समावेश माना जाता है। शिक्षा द्वारा इन सब पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुँचाया जाता है। यह शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है।

Q. 16

राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य का वर्णन कीजिए।

Ans.

राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के निम्न लिखित कार्य हैं —

1. व्यक्ति में सामाजिक कुशलता का विकास

शिक्षा का कार्य बालक में सामाजिक कुशलता का विकास करता है। किसी भी देश की उन्नति तभी हो सकती है जब उस देश के नागरिक पूर्णतः कुशल हो। जो नागरिक सामाजिक दृष्टि से कुशल तथा उन्नतिशील होते हैं वही राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। अतः व्यक्ति में कुशलता का विकास करना शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य माना गया है।

2. श्रेष्ठ नागरिकों को तैयार करना

शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य श्रेष्ठ नागरिकों को तैयार करना है। हर समाज में उत्तम नागरिकों का होना अनिवार्य माना जाता है क्योंकि उत्तम नागरिक ही देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अतः शिक्षा का कार्य श्रेष्ठ नागरिकों को तैयार करना है।

3. सफल नेतृत्व के लिये प्रशिक्षण

आधुनिक समय में किसी भी देश की वर्तमान संरचना में दक्ष नेतृत्व की आवश्यकता है। किसी भी देश की उन्नति दक्ष और सफल नेतृत्व पर ही निर्भर करती है। जनतन्त्र और नेतृत्व में आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। लोकतन्त्रात्मक गणराज्य हेतु योग्य, अनुभवी तथा कुशल नेतृत्व को तैयार करना शिक्षा का कर्ष है।

4. भावनात्मक रुकता का विकास

शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य बालक के अन्दर भावनात्मक रुकता का विकास करना है। भावनात्मक रुकता का अर्थ है राष्ट्र को रुकता के सूत्र में बांधना है। विघटनकारी तत्वों से घृणा करना है और राष्ट्र को फूट से बचना है। राष्ट्र से प्रेम करना है। पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार "भावनात्मक रुकता से मेरा अभिप्राय है हमारे विचारों और भावनाओं की रुकता एवं प्रत्यक्षता की भावनाओं का दमन।"

5. राष्ट्रीय रुकता का विकास

शिक्षा का कार्य बालक में राष्ट्रीय रुकता की भावना का विकास करना है। आज देश में धर्म, भाषा, संस्कृति, जातीयता, प्रांतीयता के नाम पर

संघर्ष हो रहा है। जिससे देश का विकास देश की अखंडता और सुरक्षा खतरे में पड़ गयी है। देश की अखंडता और सुरक्षा के लिये आवश्यक है कि आरम्भ से बालक के अन्दर राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास किया जाये।

Q.17 अवकाश से आप क्या समझते हैं? अवकाश के सदुपयोग हेतु शिक्षा की आवश्यकता बताइए।

Ans. अवकाश बहुत ही साधारण शब्द है हम सब इससे मली प्रकार परिचित हैं इसका आशय फुरसत का समय, खाली समय या बिना किसी काम के समय से लगाया जाता है।
 बंगनाथन के अनुसार "अवकाश का तात्पर्य ऐसे समय से है जिसमें व्यक्ति अपनी शारीरिक, आर्थिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा अध्यात्मिक शक्तियों के बशीमूत हो कर किसी कार्य को न करे।"
 अवकाश के सदुपयोग के विषय में शिक्षित न होने की वजह से ज्यादातर लोग अपना समय बेकार के कार्यों में बर्बाद कर देते हैं। अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिये आवश्यक है कि बालक को स्वतन्त्रक कार्यों में लगाया जाए।
 अवकाश काल में शिक्षा बालकों को स्वतन्त्रक कार्यों के लिये तैयार करती है। ज्ञान वर्धक पुस्तक

तथा प्रेरक साहित्य पढ़ने के लिये बालकों को प्रेरित किया जाए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में पुस्तकालय और वाचनालय की व्यवस्था की जाती है ताकि रवली समय में छात्र पुस्तकालय में जाकर अच्छी किताबें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं पढ़ सकते हैं जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी और अवकाश काल का सदुपयोग भी हो जायेगा। अवकाश काल में बालकों को संगीत, कला, नृत्य आदि की शिक्षा प्रदाय की जानी चाहिए। विद्यालय में सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए और ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये छात्रों को प्रेरित किया जाना चाहिए। इससे छात्रों के व्यक्तित्व का विकास भी होगा और अवकाश के समय का सदुपयोग भी होगा।

Q. 18

राष्ट्रीय एकीकरण का अर्थ और परिमाण बताइए।

Ans.

राष्ट्रीय एकीकरण से अभिप्राय राष्ट्र के निवासियों की भावनात्मक तथा आन्तरिक एकता से है जिसमें वे अपनी एक विशिष्ट जाति, धर्म, संस्कृति, सम्प्रदाय तथा प्रान्त के संकीर्ण हितों को भूल कर सम्पूर्ण राष्ट्र की एक सामान्य संस्कृति, सामान्य भाषा और जीवन शैली को अंगीकार करते हैं। सामूहिककरण की भावना से ओत-प्रोत हो कर राष्ट्र की सत्ता को स्वीकार करते हैं तथा देश के विकास में अपना

योगदान देते हैं। व्यक्तियों तथा सामाजिक शक्तियों के योग से राष्ट्र एक स्वतंत्र, सबल तथा मौलिक अस्तित्व धारण करता है। रास के शब्दों में "राष्ट्रपिता एक मानव विचार अथवा प्रेरणा है जिससे प्रभावित हो कर एक देश के रहने वाले आपस में एक-दूसरे से एक राष्ट्र के नागरिक होने के नाते सद्भावना रखते हैं और मिल जुल कर देश की उन्नति उसकी सुरक्षा एवं कल्याण के लिये सक्रिय रहते हैं।"

Q. 19 राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में क्या-क्या बाधाएँ हैं ?

Ans. राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में निम्नलिखित बाधाएँ हैं —

1. क्षेत्रवाद

अपने क्षेत्र के प्रति निवृत्ति तथा अन्य क्षेत्रों के प्रति घृणा को ही क्षेत्रवाद कहते हैं। इस भावना के कारण एक क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्ति दूसरे क्षेत्रों में निवास करने वाले व्यक्तियों को पसन्द नहीं करते हैं। इसी लिये राष्ट्रीय एकता

विश्कीकृत हो रही है।

2. निरक्षरता - हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या गाँव में निवास करती है। अभी भी बहुत से ग्रामीण क्षेत्र ऐसे ही जहाँ अभी भी शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में काफी संख्या में लोग निरक्षर हैं। ज्ञान के अभाव में पूर्व राजनीतिज्ञ इनको गुमराह करते रहते हैं और साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद का जहर डोलते रहते हैं। इस कारण राष्ट्रीय एकता की भावना को गहरा आघात पहुँच रहा है।

3. भाषावाद - भाषावाद, राष्ट्रीय एकता के विकास में एक अत्यन्त बाधक तत्व है। हमारे देश में विभिन्न भाषाएँ एवं बोलीयों बोली जाती हैं। हमारे देश में हिन्दी राष्ट्रभाषा है तथा अन्य भाषाओं को राज्य भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। हिन्दी के साथ ही इन सभी राज्य भाषाओं को भी अपने विकास एवं संवर्धन की पूर्ण सुविधा प्राप्त हो। इतरा होने के उपरान्त भी भाषा के आधार पर विवाद होता रहता है जिससे देश की एकता खण्डित होती है।

4. साम्प्रदायिकता - साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के मार्ग में एक अत्यन्त गहन समस्या है। इसी

साम्प्रदायिकता की भावना के कारण भारत का विमानन हुआ। हमारे देश में विभिन्न समुदाय के लोग निवास करते हैं। ये सभी व्यक्ति अपने धर्म को दूसरे के धर्म से अलग मानते हैं। दोती-दोती बात पर लड़-झगड़े करते हैं जिसके कारण देश की एकता को गहरा खरबका लगता है।

5. जातिवाद -

हमारे देश में असंख्य जातियाँ एवं उपजातियाँ निवास करती हैं। इन सभी जातियों में अँच-नीच एवं भेदभाव की भावना पाई जाती है। जातिवाद की वजह से भावना के कारण देश की एकता विखींचत होती है।

6. आर्थिक असमानता -

जितनी आर्थिक असमानता हमारे देश में है, उतनी शायद विश्व के अन्य किसी देश में नहीं है। एक तरफ अत्यन्त सुविधा सम्पन्न वर्ग है। तो दूसरी तरफ निर्धन वर्ग है। देश की अधिकांश जनता गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। इस आर्थिक असमानता से देश में वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है, जिस से राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा पहुँचती है।

Q. 20 राष्ट्रीय एकीकरण के विकास में शिक्षा का क्या योगदान है?

Ans. राष्ट्रीय एकीकरण के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है -

1. विद्यार्थियों में राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान और राष्ट्रमाता के प्रति सम्मान की भावना का विकास विद्यालय में किया जाता है। इससे छात्रों में राष्ट्रीय एकीकरण की भावना का विकास होता है।
2. विद्यालय के छात्रों का एक निश्चित गणवेश होता है जिससे वे अपने आपको उस विद्यालय का सदस्य समझते हैं। उनमें मेढ़ भाव की भावना समाप्त हो जाती है।
3. विद्यालय में सभी राष्ट्रीय पर्वों को मनाया जाता है जिससे छात्रों में राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना का विकास होता है।
4. शिक्षार्थियों को देश के मिनट-मिनट पहलुओं का ज्ञान प्रदान किया जाता है।
5. समथ - समथ पर विद्यालयों और महाविद्यालयों में विचार गोष्ठियों एवं सेमिनार का आयोजन किया जाता है जिससे राष्ट्रीय एकता का विकास होता है।

Q. 21

अन्तर्राष्ट्रीयता का अर्थ क्या है?

Ans.

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना से आशय विश्व-बन्धुत्व, विश्व मैत्री तथा विश्व-नागरिकता पर आधारित उस भावना से है, जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने को मात्र अपने देश की नहीं बल्कि विश्व का नागरिक समझने लगता है और अपने राष्ट्र के संकीर्ण हितों को भूल कर संसार के समस्त राष्ट्रों तथा उनके निवासियों के कल्याण की कामना करने लगता है।

गोल्डस्मिथ ने अन्तर्राष्ट्रीयता की परिभाषा इस प्रकार दी है — "अन्तर्राष्ट्रीयता मनष्य को यह बताने का प्रयत्न करती है कि व्यक्ति अपने राज्य का ही सदस्य नहीं है वरन् सम्पूर्ण संसार का नागरिक भी है।"

इस प्रकार जब व्यक्ति अपने को राष्ट्र तक सीमित न रखकर विश्व को अपना समझने लगता है, और उससे प्रेम करने लगता है, तब उसकी भावनाएं अन्तर्राष्ट्रीयता की परिधि में रहने लगती हैं।

Q. 22

मानव संसाधन विकास से आप क्या समझते हैं?

Ans.

मानव संसाधन दो शब्दों से मिलकर बना है — मानव + संसाधन। यदि हम इसका विश्लेषण करें तो पायेंगे कि मानव चेतन का प्रतिनिधित्व

करता है जब कि संसाधन जड़ का। दो विपरीत अर्थों का प्रतिनिधित्व करता यह शब्द नवीन प्रवृत्ति का परिचायक है। यह प्रवृत्ति है चेतन मनुष्य की शक्ति का जड़ संसाधन की मूर्ति प्रयोग। वर्तमान समय में मनुष्य को उत्पादन के अन्य साधनों की तरह उत्पादन का एक साधन माना जाने लगा है। शिक्षा के द्वारा मानव की क्षमता का विकास होता है। जैसे धन एक पूँजी है, साधन है, उसी प्रकार मानव भी आज एक पूँजी है, साधन है संसाधन है। यदि शिक्षा मानव संसाधन का विकास नहीं करती तो उसकी सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह लग सकता है। प्राचीन समय में बालक के चरित्र का विकास, उसका मानसिक विकास, आध्यात्मिक विकास करना शिक्षा का महत्व पूर्ण उद्देश्य माना जाता था परन्तु आज वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। जिसके कारण अनेक समस्याओं का जन्म हो रहा है। इस समस्या के समाधान के लिये भारत की विशाल जनसंख्या को मानव संसाधन में बदलना होगा। यदि जनसंख्या उत्पादक कार्य में लग जाये तो बोझ नहीं सम्पत्ति बन जायेगी। देश का आर्थिक विकास होगा।

Q. 23

'मूल्य' शब्द का अर्थ लिखिये। मानव जीवन में मूल्यों का क्या स्थान है?

Ans.

मूल्य को अंग्रेजी भाषा में वैल्यू (value) कहा गया है इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द वैलियर (valere) से हुई है, जिसका अर्थ प्रोत्पत्ति, उपयोगिता, कीमत, महत्व आदि से है। परम्पराओं से प्राप्त वह समस्त चिन्तन और क्रिया कलाप जो मानव जीवन को निर्देशित करने का कार्य करते हैं, मूल्य कहलाते हैं। मानव के जीवन और मानवीय समाज का मुख्य आधार मानवीय मूल्य है। मानवीय मूल्यों में शारीरिक, आर्थिक, नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक और संवेगात्मक मूल्य शामिल किये जाते हैं। मानवीय मूल्य सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों से जुड़े होते हैं यह ही वह मूल्य है जो मानव का मानव से समायोजन करने में सहायता प्रदान करते हैं। मानव का मानव होने के लिये प्रेम, त्याग, करुणा और एक जुटता जैसे मूल्य आदर्श हैं। मानवीय मूल्य प्रतिबद्धता की सकारात्मक भावना हैं। शिक्षा मानवीय मूल्यों के प्रति छात्रों को सजग करती है। शिक्षा मानव मूल्यों को सार्थक बनाती है। मानवीय मूल्यों की गतिशीलता तनाव, हिंसा अराजकता, अशान्ति से बचाती है।

Q.24

शिक्षा के अभिकरण का अर्थ बताइए।

Ans.

शिक्षा का अर्थ है जीवन अथवा विकास। जीवन तथा विकास का अनुक्रम होना वंशानुक्रम तथा वातावरण पर आधारित है। वंशानुक्रम निश्चित होता है। वातावरण को परिवर्तन द्वारा अच्छा अथवा बुरा बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से बालक के जीवन तथा विकास हेतु उपयुक्त वातावरण उपस्थित करना शिक्षा का कार्य है। परिवार, समुदाय, विद्यालय, धर्म राज्य, पुस्तकालय, रेडियो, टेलीविजन, प्रेस, समाचार पत्र ऐसे तत्व हैं जो बालक के लिये उपयुक्त वातावरण प्रदान करते हैं। शिक्षा में इन सभी तत्वों को शिक्षा के साधन या अभिकरण कहा जाता है। शिक्षा के अभिकरण का अर्थ स्पष्ट करते हुये डॉ. बी. जी. माटिया ने लिखा है - "समाज ने शिक्षा के कार्यों को करने के लिये अनेक विशिष्ट संस्थाओं का विकास किया है। इन्हीं संस्थाओं को शिक्षा का साधन कहा जाता है।"

Q. 25

शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों में अन्तर बताइए।

Ans.

औपचारिक साधन

अनौपचारिक साधन

- | | |
|---|---|
| 1. ये प्रत्यक्ष साधन हैं क्योंकि इनके द्वारा बालक के आचरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया जाता है। | ये परोक्ष साधन हैं, क्योंकि ये बालक के आचरण को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। |
| 2. औपचारिक साधन पूर्व नियोजित होते हैं। | अनौपचारिक साधन पूर्व नियोजित नहीं होते हैं। |
| 3. ये साधन नियमित होते हैं। | ये साधन अनियमित होते हैं। |
| 4. ये साधन कृत्रिम एवं अस्वभाविक हैं क्योंकि इनके द्वारा बालक की स्वतंत्रता को अपने नियमों एवं ५०५ विधान द्वारा नियंत्रित किया जाता है। | ये साधन स्वाभाविक तथा रोचक हैं क्योंकि इनके द्वारा बालकों की स्वतंत्रता को नियंत्रित नहीं किया जाता है। |
| 5. इनके अपने नियम और निर्धारित कार्यक्रम होते हैं। | अनौपचारिक साधनों का कोई निर्धारित कार्यक्रम नहीं होता है। |

Q.26

शिक्षा के सक्रिय एवं निविक्रय साधनों में अन्तर बताइए ।

Ans.

सक्रिय साधन

शिक्षा के सक्रिय साधनों से अभिप्राय उन साधनों से है जिनमें शिक्षा प्रदान करने तथा शिक्षा प्राप्त करने वाले दोनों व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से प्रतिक्रिया करते हैं। इस प्रकार दोनों के आचरण में रूपान्तर होता है। इसके अन्तर्गत परिवार, समुदाय, राज्य विद्यालय, सामुदायिक केन्द्र, चर्चे आदि आते हैं।

निविक्रय साधन

शिक्षा के निविक्रय साधन वे हैं जिनका प्रभाव एक तरफा होता है। इनमें शिक्षा देने वाला पक्ष निविक्रय होता है। इनके द्वारा शिक्षा प्राप्त करने वाले को प्रभावित किया जाता है। पर स्वयं शिक्षा प्रदान करने वाला प्रभावित नहीं होता है। इनके अन्तर्गत प्रेस या समाचार-पत्र एवं पत्रिका हैं, टेलीविजन, सिनेमा आदि आते हैं।

Q.27

शिक्षा के औपचारिक के प्रकार बताइए।

Ans.

शिक्षा के साधनों का वर्गीकरण -

सामान्यतः शिक्षा के साधनों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। ये वर्ग निम्न लिखित हैं -

(I) औपचारिक साधन

शिक्षा के औपचारिक साधन वे हैं जहाँ पर बालकों को जान-बूझकर नियमित रूप से निश्चित स्थान पर निश्चित व्यक्तियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। इनके अन्तर्गत विद्यालय, पुस्तकालय, पुस्तकें आदि आते हैं।

(II) अनौपचारिक साधन

शिक्षा के अनौपचारिक साधन वे हैं जिनमें किसी नियम के बिना शिक्षा प्रदान की जाती है। इनमें विधिपूर्वक प्रवेश करना आवश्यक नहीं होता है और न ही इनका कोई निश्चित पाठ्यक्रम होता है। ऐसे साधन निजी क्रियाओं द्वारा स्वाभाविक रूप से शिक्षा प्रदान करने का काम करते हैं। इनके अन्तर्गत घर या परिवार, समुदाय, धार्मिक संस्थाएँ, संगी-साथी

राज्य, रेडियो, समाचार पत्र, ग्राहक सिनेमा आदि साधन आते हैं। व्यक्ति की अधिकांश शिक्षा इन्हीं साधनों द्वारा होती है।

Unit IV

Q. 28

भारतीय संविधान के मूल तत्व बताइए।

Ans.

भारतीय संविधान के मूल तत्व निम्नलिखित हैं—

1. आजादी या स्वतंत्रता — स्वतंत्रता संविधान की आत्मा है। स्वतंत्रता के बिना व्यक्ति अपनी पूर्ण शक्तियों को विकसित नहीं कर सकता है। स्वतंत्रता से अभिप्राय मात्र अपनी इच्छाओं को दूसरे के हितों की उपेक्षा करके अपनी निजी दृष्टि से संतुष्ट करना नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता तभी तक है जब तक वह दूसरों की स्वतंत्रता में बाधा नहीं देता है। अपनी स्वतंत्रता के साथ-साथ दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करना है।
2. समानता — संवैधानिक मूल्यों के अस्तित्व हेतु स्वतंत्रता के साथ-साथ हर व्यक्ति को समान अधिकार

देना भी जरूरी है। संविधान की दृष्टि में सभी व्यक्ति समान हैं। संविधान के अनुसार किसी भी व्यक्ति के साथ रंग-रूप, जन्म, जाति, धर्म, वर्ग, लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये। सभी को अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये समान अवसर मिलना चाहिये।

3. बन्धुत्व

बन्धुत्व का अर्थ है भाई-चारे की भावना। देश का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहे। आपस में प्रेम तथा भाई-चारे की भावना हो। तथा देश के विकास में अपना योगदान दे।

न्याय

पूँ तो फ्रांस की क्रांति ने हमारे सामने संविधान के उपर्युक्त तीन ही सिद्धान्त रखे हैं, लेकिन भारत में न्याय के सिद्धान्त को और जोड़ दिया गया है। संविधान की सफलता हेतु न्याय का होना अत्यन्त जरूरी है। इस सिद्धान्त के अनुसार समाज के सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के न्याय मिलना चाहिये।

Q. 29 शिक्षा के लिये संवैधानिक प्रावधानों का वर्णन कीजिए।

Ans.

संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत सुप्रीम कोर्ट ने माना है कि शिक्षा का अधिकार अब एक मौलिक अधिकार है। शिक्षा के लिये प्रमुख संवैधानिक प्रावधान निम्नलिखित हैं—

1. अनुच्छेद-24 - यह 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के कारखानों और खतरनाक रोजगार में निमोजन पर रोक लगाता है।
2. अनुच्छेद-25 - यह प्रत्येक व्यक्ति को किसी धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने की गारंटी देता है। लेकिन यह पूर्ण अधिकार नहीं है, सरकार निम्न लिखित के आधार पर प्रतिबंध लगा सकती है— सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य।
3. अनुच्छेद-26 - यह कहता है कि प्रत्येक धार्मिक संस्थाओं को प्रदर्शन करने, अपने धर्म को मानने का अधिकार है तथा चल व अचल सम्पत्ति भी अर्जित करने का अधिकार है।
4. अनुच्छेद-29 - यह राज्य सहायता प्राप्त शैक्षिक संस्थानों में धार्मिक निर्देश, उपदेश और शिक्षाओं को प्रतिबंधित करता है।
5. अनुच्छेद-30 - यह अल्पसंख्यकों को अपनी

पसन्द की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और प्रबंधन के अधिकार की गारंटी देता है।

- 6 अनुच्छेद-55- संविधान राज्य को संविधान के प्रारम्भ से 10 वर्षों की अवधि के भीतर सभी 06 वर्ष से 14 वर्ष के बालक बालिकाओं को निशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की मंजूर करता है।

Unit V

Q.30 पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से क्या आशय है?

Ans. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है, प्राथमिक शिक्षा से पहले की शिक्षा।

अन्य शब्दों में बालक प्राथमिक विद्यालय की प्रथम कक्षा में प्रवेश से पहले जो भी शिक्षा प्राप्त करता है, पूर्व प्राथमिक शिक्षा कहलाती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा

माता के गर्भ-चारण के साथ ही प्रारम्भ हो जाती है। भारत में पूर्व प्राथमिक शिक्षा

से तात्पर्य 02 से 06 वर्ष तक की आयु तक के बच्चों को जो शिक्षा प्रदान की जाती

है उसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है। आजादी के बाद भी भारत

में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कोई व्यवस्था

ज्याबल्या नहीं है। हमारे देश में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नाम पर मांटेसरी, नर्सरी, किण्डर गार्टन, शिशु मन्दिर आदि विद्यालय प्राइवेट तौर पर शिक्षा प्रदान करते हैं।

Q. 31

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य बताइए।

Ans.

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं—

1. स्वस्थ आदतों का विकास।
2. बौद्धिक जिज्ञासा विकसित करना।
3. बालक में सौन्दर्यात्मक बोध का विकास करना।
4. शिशु में वस्त्र पहनने, भोजन करने, स्वच्छ रहने की योग्यता का विकास करना।
5. शिशु में वांछनीय सामाजिक अभिवृत्तियों एवं व्यवहार के प्रतिमानों का विकास करना।
6. प्राथमिक शिक्षा हेतु बालकों को तैयार करना।
7. बालकों की विभिन्न शान्ति-निद्रियों का प्रशिक्षण एवं विकास करना।
8. बालकों की कल्पना शक्ति का विकास करना।

Q.32 पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालिए।

Ans. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

1. शिशुओं के उचित पोषण एवं रोगों की रोकथाम हेतु — हमारे देश के अधिकतर माता-पिता बच्चों के उचित पोषण के लिये जागरूक नहीं हैं, वे उन्हें रोगों से बचाते हेतु अधिक ध्यान नहीं देते हैं। इसके दो मुख्य कारण हैं प्रथम अशिक्षा तथा द्वितीय निधनता। ऐसी स्थिति में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की उचित व्यवस्था की बहुत आवश्यकता है ताकि बच्चों में साफ-सफाई की आदत, बच्चों को पोषक पदार्थ तथा खेल-कूद की व्यवस्था आदि दी जा सके।

2. उचित व्यक्तित्व के निर्माण हेतु — शिशु काल में बच्चों के संवेग स्थिर होते हैं उनमें स्थायी भाव निर्मित होते हैं, संस्कारों की नींव रखी जाती है मूल्यों की रचना होती है। उनमें आध्यात्मिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि बालक के व्यक्तित्व के निर्माण के

लिये पूर्व प्राथमिक शिक्षा आवश्यक और महत्व पूर्ण है।

3. मावनात्मक विकास हेतु - बालक में मावनात्मक विकास के लिये पूर्व प्राथमिक शिक्षा बहुत ही महत्व पूर्ण है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा खेल विधि पर आधारित होने के कारण बालक को अभिव्यक्ति एवं रुचियों के विकास का अवसर प्राप्त होता है।

4. प्राथमिक शिक्षा के लिये तैयार करे हेतु - पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा के लिये तैयार करे हेतु भी बहुत महत्व पूर्ण एवं आवश्यक है क्योंकि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के द्वारा ही बालक में सीखने की भावना का विकास होता है।

भाषा के विकास के लिये - मने वैज्ञानिक शोध के परिणाम में बताते हैं कि सीखने की दृष्टि से शिशुकाल सबसे अधिक उपयुक्त काल है विशेष रूप से भाषा सीखने के लिये। अतः यह शिक्षा बालकों में भाषा का उचित रूप से विकास करने में सहायक है।

==

Q.33 डाल्टन योजना के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans. डाल्टन योजना को प्रयोगशाला योजना भी कहा गया है। यह एक शिक्षण प्रणाली है। इसका प्रतिपादन अमेरिकी शिक्षाशास्त्री कुमारी हेलेन पार्क्स ने किया था। इस योजना का आरम्भ डाल्टन नामक स्थान पर किया गया था इस लिये इसे डाल्टन योजना के नाम से जाना जाता है। यह योजना 8 वर्ष से 12 वर्ष तक की अवस्था के बालकों के लिये तैयार की गयी थी।

इस योजना के दो प्रमुख सिद्धान्त हैं-

- 1- बच्चों को स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करने की सुविधा देना।
 - 2- बालकों को उनकी रुचि के अनुसार कार्य करने का अवसर प्रदान करना।
- डाल्टन योजना में अध्यापक को कोई अधिकार नहीं होता है कि वह बालकों के कार्य में कोई बाधा डाले। अध्यापक केवल छात्रों को परामर्श दे सकता है। इसमें छात्रों को कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता होती है।

Q. 34. डाल्टन प्रणाली के प्रमुख सिद्धान्त कौन-2 से हैं ?

Ans. डाल्टन प्रणाली के निम्न सिद्धान्त हैं —

1. बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली ।
2. स्वशिक्षा के सिद्धान्त को प्राथमिकता ।
3. स्वतंत्रता के सिद्धान्त को प्राथमिकता ।
4. व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धान्त पर विशेष बल ।
5. सामूहिक शिक्षा के सिद्धान्त को प्रोत्साहन ।
6. सामाजिक सम्बन्धों का सिद्धान्त ।
7. कथि का सिद्धान्त ।

Q. 35. मॉण्टेसरी विधि के बारे में आप क्या जानते हैं ?

Ans. मॉण्टेसरी विधि का प्रतिपादन डाक्टर मारिया मॉण्टेसरी ने किया था। मारिया मॉण्टेसरी इटली की मूल निवासी थीं। मॉण्टेसरी विधि खेल विधि पर आधारित है। मॉण्टेसरी विधि को साइन्स विधि के नाम से भी जाना जाता है। यह रुसो के प्रकृतिवादी सिद्धान्त पर आधारित है। इस विधि में 3 से 6 वर्ष के आयु के बालकों को शिक्षा दी जाती है। मॉण्टेसरी

प्रकृति में तीन प्रकार से शिक्षा दी जाती है—

1. माता की शिक्षा
2. कर्म बन्धियों की शिक्षा
3. ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा

मॉन्टेसरी प्रणाली में बालकों को खेल के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। यह एक मनो वैज्ञानिक विधि है। इस विधि में इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है। यह प्रणाली सीखने के सिद्धान्त पर कार्य करती है। इसमें बालक को स्वतंत्र रूप से सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है।

Q.36 मॉन्टेसरी प्रणाली के गुण और दोष बताइए।

मॉन्टेसरी प्रणाली के निम्न लिखित गुण हैं—

1. मॉन्टेसरी प्रणाली में विद्यालय आकर्षण के केन्द्र होते हैं, यहाँ छात्र खेल-खेल में सीखते हैं। विद्यालय में घर जैसा वातावरण होता है। बच्चों को स्वाभाविक विकास का अवसर प्राप्त होता है।
2. यह मनोवैज्ञानिक प्रणाली है।

3. इस प्रणाली में शान्ताजिन का कार्य क्रमानुसार सतत रूप से चलता रहता है।
4. बालक इस प्रणाली में स्वतंत्रता पूर्ण कार्य करता है जिससे उसमें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास जैसे गुणों को सकारात्मक रूप से विकसित होने का अवसर मिलता है।
5. इस प्रणाली में बालक विषयों का चपने करने के लिये स्वतंत्र होता है।
6. यह शिक्षा प्रणाली कक्षा शिक्षण और परीक्षा प्रणाली के दोनों से मुक्त है।

दोष

1. इस प्रणाली में सामाजिकता का अभाव है क्योंकि बालक अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं।
2. इस पद्धति में समय और श्रम अधिक लगता है।
3. इसमें शिक्षण की गति बहुत मंद होती है।
4. इस प्रणाली में बालक की स्वतंत्रता पर बहुत अधिक बल दिया जाता है और शिक्षक का व्यक्तित्व बिल्कुल गौण हो जाता है।
5. विद्यालय का कार्य एक घंटे के समापन चलता है।

Q-37

किंग्स गार्टन प्रणाली के बारे में आप क्या जानते हैं ?

Ans.

किंग्स गार्टन प्रणाली के जन्म दाता प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फ्रेडरिक फ्रेडरिक फ्रेडरिक का कहना था कि "बालक एक अविकसित पौधा है जो शिक्षक रूपी माली की देखरेख में विकसित होता है किंग्स गार्टन का अर्थ है बच्चों की फुलवारी। फ्रेडरिक ने एक ऐसे विद्यालय की योजना बनायी जिसमें न तो पुस्तकें हो और न ही बंधे हुए बौद्धिक पाठ ही हों बल्कि इनके बदले इस प्रणाली में खेल कूद और स्वतंत्र विचरण को महत्व दिया गया। फ्रेडरिक ने अनेक खेलों की रचना की। इन खेलों का उद्देश्य बालक शारीरिक, मानसिक - विकास करना था। इस पद्धति में फ्रेडरिक ने बालकों को क्रियाशील बनाने के लिये पाँच प्रकार के कार्य निर्धारित किये -

- (1) कहानियाँ
- (2) मान - खेल एवं शिष्टुगीत
- (3) उपहार
- (4) कपि तथा व्यापार
- (5) स्वतंत्र क्रियापे

इस प्रणाली में शिक्षक मित्र और पथ प्रदर्शक की भूमिका में होता है।

Q.38

उपहार एवं उद्यम से फ्रीबेल का क्या तात्पर्य है ?

Ans.

फ्रीबेल के उपहारों तथा व्यापारों में यही अन्तर है कि उपहारों द्वारा तो बिना उसका आकार बदले ही कुछ निश्चित सामग्री को मिलने और पुनः क्रम बद्ध करने की क्रिया हो सकती है किन्तु व्यापारों द्वारा सामग्री का आकार बदलने सुधारने और दूसरा रूप देने की क्रिया भी हो सकती है। आज कल फिण्डरगार्टन में उपहारों के बदले व्यापारों को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। इसके द्वारा दस्त-कौशल तथा रचनात्मक कार्यों की जीव गली जाती है।

Q.39

फिण्डरगार्टन पद्धति में खेल का महत्व बताइए।

Ans.

फ्रीबेल के अनुसार बालक की स्वभाविक प्रवृत्ति खेल होती है। बालक अपनी स्वभाविक क्रियाओं में बहुत रुचि लेता है तथा आनन्द का अनुभव करता है। क्योंकि वे उसकी आन्तरिक भावना, इच्छा तथा प्रेरणा से सम्पन्न होते हैं। खेल बालक की स्वभाविक क्रिया है और शिक्षा की दृष्टि से महत्व पूर्ण है। फ्रीबेल ने खेल को ज्ञान प्रदर्शन का प्रेरक माना है। खेल द्वारा बालक चीजों को आसानी से सीख लेता है।

बालक के अन्दर छिपी हुई शक्तियों को खेल के माध्यम से जागृत किया जा सकता है। बालक की नैसर्गिक शक्तियों का विकास खेल द्वारा किया जा सकता है।

Unit VI

Q. 40

प्राथमिक शिक्षा से आप क्या समझते हैं?

Ans.

औपचारिक रूप से शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। वर्तमान समय में सामान्यतः बालक की 6 वर्ष की आयु से प्राथमिक शिक्षा का आरम्भ हो जाता है। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्तर है। जिसकी गुणात्मकता का न केवल छात्रों के भविष्य पर अपितु सम्पूर्ण देश पर सुनिश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने नरेशों एवं ब्रिटिश सरकार के द्वारा प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के सम्बन्ध में प्रयास किया जा चुका था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान की धारा 51 में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य बनाने

का संकल्प लिखा गया। संविधान में कहा गया कि संविधान लागू होने के दस वर्ष के अन्दर राज्य अपने क्षेत्रों के सभी 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बालकों निःशुल्क व अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करेगा। लेकिन अभी तक प्राथमिक शिक्षा को पूरी तरह अनिवार्य नहीं किया जा सका है।

Q. 4/ प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या से आप क्या समझते हैं ?

Ans. प्राथमिक शिक्षा के विकास में बाधक विभिन्न समस्याओं में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या एक गम्भीर समस्या है। अपव्यय से तात्पर्य रखे किपे जाने वाले उस धन की शक्ति एवं समय से है जो प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों के लिये किसी भी प्रकार से लाभदायक सिद्ध नहीं होता है। जब कोई बालक प्राथमिक शिक्षा की अवधि पूरी होने से पहले ही पढ़ाई बीच में छोड़ देता है। तो इसे अपव्यय की समस्या के नाम से जाना जाता है। इसी तरह जब एक बालक एक ही कक्षा में कई वर्ष तक अनुत्तीर्ण होता है तो उसे अवरोधन की समस्या कहा जाता है। इस समस्या का मुख्य कारण अभिभावकों की रुढ़िवादिता

एवं शिक्षा ही माता-पिता की आर्थिक स्थिति भी इस समस्या का मुख्य कारण है। इस समस्या का समाधान यथा शीघ्र किया जाना चाहिए।

Q. 42 ऑपरेशन ब्लैक-बोर्ड से आप क्या समझते हैं?

Ans. संविधान की धारा 51 में 14 वर्ष के बालक और बालिकाओं को इस वर्ष के अन्दर अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने का दायित्व राज्य को सौंपा गया था। इतने समय के बाद भी राज्य संवैधानिक दायित्व को पूरा करने में असमर्थ रहा है। स्वाधीनता के उपरान्त प्राथमिक शिक्षा का प्रसार काफी तीव्र गति के साथ किया गया जिसके परिणामस्वरूप अनेक स्थानों पर प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी। लेकिन विद्यालयों की संख्या में इस वृद्धि का उनकी गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ा, क्योंकि प्राथमिक विद्यालय खोलते समय आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराने पर ध्यान नहीं दिया गया। प्राथमिक विद्यालयों में आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिये ऑपरेशन

ब्लैक बोर्ड नामक कार्यक्रम तैयार किया गया। ऑपरेशन ब्लैक-बोर्ड के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में दो बड़े कमरे, आवश्यक खेल सामग्री एवं शिक्लें, श्यामपट्ट, मानचित्र, नक्शे तथा अन्य सहायक सामग्री को न्यूनतम आवश्यकताओं के रूप में निर्धारित किया गया है।

Q. 43

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

Ans.

माध्यमिक शिक्षा के निम्न लिखित उद्देश्य हैं-

- (1) छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक मूल्यों को विकसित करना।
- (2) छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करना।
- (3) छात्रों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना है।
- (4) छात्रों में लोकतांत्रिक नागरिकता को विकसित करना।
- (5) शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण की गति को तीव्र करना।
- (6) छात्रों को कुशल नेतृत्व के लिये तैयार करना है।
- (7) छात्रों का पर्यावरण संरक्षण के लिये जागरूक करना।

Unit VII

Page No. _____

Date: _____

Q.44

उच्च शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालिये।

Ans.

प्राचीन काल से ही उच्च शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। उच्च शिक्षा के बिना समाज या देश की प्रगति सम्भव नहीं है। आधुनिक समय में उच्च शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। उच्च शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के तहत स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करने हेतु

क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करने की क्षमता उच्च शिक्षा में ही होती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति संकुचित एवं संकीर्णता के क्षेत्र से बाहर निकल कर सहिष्णुता के क्षेत्र में प्रवेश करता है।

(2) कर्मकुशलता और नेतृत्व क्षमता का विकास करने हेतु

उच्च शिक्षा की आवश्यकता व्यक्ति के अन्दर कर्मकुशलता और नेतृत्व क्षमता का विकास करने के लिये है। उच्च शिक्षा के द्वारा

ही क्षेत्रों में कुशल नेतृत्व क्षमता का विकास किया जा सकता है। उच्च शिक्षित लोग ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व वही कुशलता से करते हैं। इसी लिये उच्च शिक्षा का विशेष महत्व है।

(3) राष्ट्र के चतुर्मुखी विकास हेतु

राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में चतुर्मुखी विकास करने के लिये सर्वप्रथम प्राकृतिक एवं मानव संसाधन की जरूरत पड़ती है। उच्च शिक्षा उच्च स्तरीय मानवीय संसाधन का निर्माण करती है। जो राष्ट्र के विकास में अपना महत्व पूर्ण योगदान देते हैं।

(4) विषय विशेषज्ञों के निर्माण हेतु

राष्ट्र, समाज एवं मानव के विकास के लिये अनेकात्रेक विषयों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है जिसे पूरा करने के लिये उच्च शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता का महत्व पूर्ण स्थान है। उच्च शिक्षा के द्वारा ही धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा कानून, शिक्षण, संगठन एवं प्रशासन आदि के लिये विशेषज्ञ तैयार किये जाते हैं।

Q.45 उच्च शिक्षा के उद्देश्य बताइए।

उच्च शिक्षा के निम्न लिखित उद्देश्य हैं—

1. छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।
2. छात्रों में नैतिकता, सदाचार व आदर्श नागरिकता का विकास करना।
3. प्रजातन्त्र की सफलता हेतु कुशल नागरिक तैयार करना।
4. सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण व प्रसार करना।
5. छात्रों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना।
6. शिक्षा के द्वारा समानता व सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना तथा सांस्कृतिक व सामाजिक विभिन्नताओं को स्वल्प करना।
7. नवीन ज्ञान की खोज करना।
8. जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित नेतृत्व प्रदान करना।

Unit VIII

Q. 46

शिक्षा मंत्रालय के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम 29 जुलाई 2020 को बदल कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। स्वतंत्रता के बाद यह मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय के नाम से ही जाना जाता था परन्तु 1985 में इस मंत्रालय का नाम बदल कर मानव संसाधन विकास कर दिया गया और इसके अन्तर्गत संस्कृति युवा कल्याण खेल, महिला और बाल विकास जैसे कई और विभाग समाहित कर दिये गये। राजीव गांधी सरकार में बने इस मंत्रालय की सबसे बड़ी उपलब्धि नयी शिक्षा नीति 1986 थी। 1999 ई. में संस्कृत विभाग को अलग कर दिया गया फिर युवा मामलों को अलग किया गया। 2006 ई. में पू. पी. ए. सरकार ने महिला और बाल विकास विभाग को अलग कर मंत्रालय बना दिया। 29 जुलाई 2020 में नये शिक्षा मंत्री का कार्य चर्मन्त्र प्रधान जी को मिला।

Q. 47

एन. सी. ई. आर. टी. (N.C.E.R.T.) के बारे में आप क्या जानते हैं?

Ans.

एन. सी. ई. आर. टी. का पूरा नाम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद है। शैक्षिक

अनुसंधान के विकास, प्रकाशन, परिशोधन और शिक्षण सम्बन्धी कार्यक्रमों और शिक्षा के विविध क्षेत्रों में सुधार लाना इसका मुख्य उद्देश्य है। एक सितम्बर 1961 में NCERT का गठन किया गया। यह संस्था राष्ट्र की शिक्षा की अग्रणी संस्थाओं में एक है। शैक्षिक अनुसंधान, पाठ्यक्रम के सन्तुलित विकास नवाचारी परीक्षा के विविध पहलुओं और सुव्यवस्थित मूल्यांकन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

NCERT का कार्य राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय महाविद्यालयों का संचालन और प्रशासन करना है।

सेवारत शिक्षकों को नवीन परिवर्तनों और आपातों से परिचित करना तथा शोधकार्यों को अनुदान देना। उत्तम प्रकार की अनुदेशन सामग्री का प्रकाशन करना। इन सभी कार्यों का सम्पादन NCERT के द्वारा किया जाता है।

Q 48 पूंजी सी० (U.C.C.) के बारे में आप क्या जानते हैं।

Ans. पूंजी सी० का पूरा नाम विश्व विद्यालय अनुदान आयोग है। यह सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को नियमानुसार मापदण्ड पर खरे उतरने पर अनुदान प्रदान करने वाला केन्द्रिय सरकार का महत्वपूर्ण उपक्रम है। इसका मुख्यालय नयी दिल्ली में है और इसके 6 क्षेत्रीय कार्यालय इसके कार्यों को सुगम बनाते हुए आयोग के कार्यों को पूरी निष्पक्षता और पारदर्शिता से करते हैं।

1953 में देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने औपचारिक रूप से इसकी नींव रखी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षा की उन्नति और समन्वय के लिए आवश्यक कदम उठाने एवं विश्वविद्यालयों में अध्यापन, अनुसंधान, परीक्षाओं, संसाधन आदि-स्तरों को नियमानुसार सुनिश्चित करने का कार्य करता है।

Q. 49

एन. ए. सी. (NAAC) से आप क्या समझते हैं?

Ans.

NAAC का पूरा नाम राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यापन संस्थान है। 1994 में इसकी नियुक्ति की गयी इसका मुख्यालय बंगलुरु में है। देश की बड़ी दृष्टि रैखिक संस्थाओं के नीति निर्माण, नियामक एवं निरीक्षण करने गुणवत्ता बनाये रखने, संस्थाओं का मूल्यांकन कर इन्हें रैंकिंग प्रदान करने के उद्देश्य से NAAC की स्थापना की गयी। NAAC का मूल्यांकन शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता पर बल देता है। परिषद का कार्य उच्चतर शिक्षा की संस्थाओं विश्व विद्यालयों, महाविद्यालयों और उनके विविध सक्रिय विभागों का मूल्यांकन कर उनको प्रत्यापित (मान्यता) प्रदान करना है। परिषद प्रथम चरण में गुणवत्ता मूल्यांकन कर आपेक्षित पात्र प्राप्त करती है और द्वितीय चरण में संस्था का मूल्यांकन के आधार पर A, B, C ग्रेड प्रदान करती है।

Q. 50

आई. व् यू. ए. सी. (IQAC) के बारे में आप क्या जानते हैं ?

Ans

आई. व् यू. ए. सी. का पूरा नाम आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ है। यू. जी. सी. के द्वारा 1994 में एक स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापना की गयी। इस प्रकोष्ठ का मुख्य कार्य शैक्षिक संस्थानों के मानकों का विधिवत सूक्ष्मता से निरीक्षण करना। शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता वृद्धि में संस्थागत कार्यों की स्पष्टता का स्तर बढ़ता है, एक बेहतर संचार और प्रलेखन की संगठित पद्धति का निर्माण शैक्षिक कार्यों में सुधार, संस्कृति का आंतरिकीकरण का सुनिश्चित होना जैसी सुगम प्रक्रियाओं से शैक्षिक संस्थाएँ अपने लक्ष्य को राष्ट्रीय और अन्तरा-राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त करती हैं। यह प्रकोष्ठ अपने उद्देश्यों पर सुनिश्चित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है।